प्रातः क्लास 4/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं कि गीता के भगवान ने गीता सुनाई एक बार। सुनाकर फिर तो चले जावेंगे। अगर कृष्ण को सुनाई तो उसने भी सुनाकर फिर वह शरीर छोड़ जाकर दूसरा जन्म लिया होगा। बच्चा बना होगा फिर तो गीता सुनाई नहीं होगी। अभी तुमको गीता अर्थात् गीता का ज्ञान भगवान सुना रहे हैं, तुम राजयोग सीख रहे हो। और भी बहुत मनुष्य हैं जो गीता सुनाते रहते हैं। पढ़कर कंठ कर लेते हैं फिर सुनाते रहते हैं। अच्छा वह भी तो शरीर छोड़कर जाकर बच्चा बन जाते। तो फिर सुना न सके। अभी तुमको बाप गीता ज्ञान ही सुनाते रहते हैं जबतक तुम राजाई प्राप्त करो। टीचर पाठ पढ़ाते हैं जबतक पाठ पूरा हो जाये तब तक सुनाते रहते हैं। पाठ पूरा हो जाता है तो फिर हद की कमाई को लग जाते हैं। टीचर से पढ़ो कमाई की, बूढ़े हुए शरीर छोड़ा फिर दूसरा शरीर जाकर लेते हैं। वह लोग गीता सुनाते हैं, उनसे प्राप्ति क्या होती है वह तो कोई को पता नहीं है। गीता सुनाते2 मर जाते हैं। फिर दूसरे जन्म में जाकर बच्चा बना, सुना ..... सके। जब बड़े हो, बुजुर्ग बने गीता पाठी होवे तब फिर सुनावे। यहाँ बाप तो एक ही बार पढ़ाते हैं। शरीर छोड़ा फिर तो गीता सुनाने, पढ़ाने की है नहीं। अभी तो इस शरीर में विराजमान है। फिर तो गीता सुनाने की दरकार ही नहीं रहेगी। बाप एक ही बार शान्तिधाम में आकर पढ़ाते हैं। फिर चले जाते हैं। बाप कहते हैं तुमको योग सिखलाकर हम अपने घर चले जाते हैं। जिनको पढ़ाता हूँ वह फिर आकर अपनी प्रारब्ध भोगते हैं। ..... को पढ़ाता हूँ वह अपनी कमाई करते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार धारण कर चले जाते हैं। कहाँ? नई दुनिया में। पढ़ाई है ही नई दुनिया की। मनुष्य तो बिचारे यह जानते ही नहीं कि यह पुरानी दुनिया खत्म हो नई दुनिया स्थापन होनी है। यह कोई भी नहीं जानते हैं सिवाय तुम्हारे। तुम समझते हो हम राजयोग ..... ही हैं नई दुनिया के लिए। फिर यह न पुरानी दुनिया न पुराना शरीर होगा। आत्मा तो अविनाशी है। आत्माएँ पवित्र बनकर फिर पवित्र दुनिया में चली जाती हैं। तुम समझते हो नई दुनिया थी जिनमें देवी देवताओं का राज्य था। जिसको स्वर्ग कहा जाता है। वह नई दुनिया बनाने वाला भगवान ही है। वह एक ..... की स्थापना कराते हैं। कोई देवता द्वारा नहीं कराते। देवताएँ तो यहाँ होते ही नहीं। तो जरूर ..... मनुष्य से ही ज्ञान देंगे जो फिर देवता बनेंगे। मनुष्य से देवता बनाते हैं ना। कृष्ण तो देवता ही है ..... वाला। वह तो पुनर्जन्म लेते2 देवता से शूद्र बन, फिर अभी शूद्र से ब्राह्मण बना है। यह राज़ भी तुम ..... ही जानते हो। भगवान निराकार ही है जो नई दुनिया रचते हैं। अभी तो रावण राज्य है। तुम पूछते भी कलियुगी पतित हो या सतयुगी पावन हो? परन्तु समझते नहीं हैं। कलियुग है ही आयरन एजेड दुनिया। बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। कहते हैं हमने 5000 वर्ष पहले भी तुमको समझाया था। हम आते ही तुम बच्चों को आधा कल्प के लिए सुखी बनाने। फिर रावण आकर दुखी बनाते हैं। आधा कल्प सुखधाम आधा कल्प दुखधाम। दुख और सुख का खेल है ना। कल्प की आयु 5000 वर्ष है। तो उनको फिर आधा2 करना ....। रावण राज्य में सभी देहाभिमानी विकारी बन जाते हैं। यह बातें तो अभी तुम समझते हो। आगे नहीं समझते थे। कल्प2 जो समझते हैं वही समझ लेते हैं। जो देवता बनने वाले नहीं वह आवेंगे ही नहीं। तुम देवी–(देव)ता धर्म के पत्ते लगाते हो। वह जब आसुरी तमोप्रधान बन जाते हैं तो उनको दैवी झाड़ नहीं कहेंगे। झाड़ नया था तो सतोप्रधान था। हम उनके पत्ते देवी देवता थे। फिर सतोप्रधान से सतो रजो तमो में आये। ..... पत्ते थोड़े हो गये। पुरानी दुनिया में पुराने मनुष्य ही रहेंगे। तुम ही नये पत्ते थे तुम ही पुराने पत्ते बने। इस समय मनुष्य सृष्टि का झाड़ पुराना है। सतयुग में नया था। अभी पुराना है। तो पुराने को फिर नया .....ना पड़े। अभी देवी देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। बाप भी कहते हैं जब2 धर्म की ग्लानि हो जाती ..... जावेगा किस धर्म की ग्लानी होती है। जरूर कहेंगे आदि सनातन देवी देवत धर्म की। जो मैंने स्थापन ..... था वह धर्म ही प्रायःलोप हो गया। उनके बदली अधर्म हो गया। तो जब धर्म से अधर्म की वृद्धि हो ..... है, ऐसे नहीं कहेंगे धर्म की वृद्धि, धर्म तो प्रायःलोप हो गया। बाकी अधर्म की वृद्धि हुई। वृद्धि तो सभी

धर्मों की होती है। पहले थोड़े होते हैं फिर वृद्धि होती है। एक क्राइस्ट से कितने क्रिश्चयन धर्म की वृद्धि होती है। बाकी देवी–देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। पतित बनने कारण आपे ही ग्लानी करते हैं। धर्म से अधर्म यह एक ही होता है। और तो सभी धर्म ठीक चल रहे हैं। सभी अपने2 धर्म पर कायम है। बाकी जो आदि सनातन देवी देवता धर्म वायसलेस था वह विषस बन पड़ी है। हमने पावन दुनिया स्थापन की। फिर पावन से पतित शूद्र बन पड़ते। अर्थात् उस धर्म की ग्लानी हो गई है। अपवित्र बन पड़े हैं। तो अपनी ग्लानी की है। पतित बन जाते हैं विकार में जाने से। अपन को देवता कहला न सके। ग्लानी कर देते हैं। भारतवासी इस समय विषस हैं। इसलिए बाप कहते हैं मैं फिर आता हूँ वायसलेस बनाने। तुम वायसलेस थे। 84 जन्म लेते2 अभी विषस बने हो। दुनिया पुरानी होती जाती है ना। पहले2 तो देवी देवता धर्म वाले वायसलेस थे। अभी तुम भारतवासी हो जिसकी ग्लानी हो गई है। पूज्य से पुजारी बन पड़े हैं। स्वर्ग से बदल नर्क हो गया है। तो कोई भी वाह वाह है नहीं। तुम कितने छी छी बन गये हो। बाप कहते हैं हमने तुमको वाह वाह फूल बनाया फिर रावण ने तुमको कांटा बना दिया। पावन से पतित बन गये हो। अपनी धर्म की ही हालत देखनी है। पुकारते भी हैं कि हमारी हालत आकर देखो, हम कैसे पतित बने हैं। फिर हमको पावन बनाओ। पतित से पावन बनाने लिए बाप आते हैं। तो फिर पावन बनना चाहिए ना। अपन को देखते रहो सर्वगुण सम्पन्न बने हैं। देवताओं मिसल हमारी चलन है। देवताओं के राज्य में तो विश्व में शान्ति थी। अभी फिर तुमको सिखलाने आया हूँ विश्व में शान्ति कैसे स्थापन हो। तो तुमको भी शांत में रहना पड़े। शांत होने की युक्ति बताता हूँ मेरे को याद करो तो तुम शांत हो शान्तिधाम में चले जावेंगे। कोई बच्चे तो शांत में रहकर औरों को भी शांत में रहना सिखलाते हैं। कोई तो अशान्त कर देते हैं। खुद अशांत रहते हैं तो औरों को भी अशांत बना देते हैं। शांति का अर्थ नहीं समझते। यहाँ आते हैं शांति सीखने। फिर यहाँ से जाते हैं तो अशांत हो जाते। अशांत होते ही हैं अपवित्रता से। यहाँ आकर प्रतिज्ञा करते हैं बाबा हम आपका ही हूँ। आपसे विश्व की बादशाही लेनी है। हम पवित्र रहकर विश्व के मालिक जरूर बनेंगे। फिर घर में जाते हैं तो माया तूफान में ले आती। युद्ध होती है ना। फिर माया का गुलाम बन पतित बनना चाहते हैं। अबलाओं पर अत्याचार वही करते हैं जो प्रतिज्ञा भी करते हैं हम पवित्र रहेंगे फिर माया का वार होने से प्रतिज्ञा भूल जाते हैं। भगवान से प्रतिज्ञा की है कि हम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया का वरसा लेंगे। हम सिवील आई रखेंगे। कब अपनी दृष्टि को क्रिमनल नहीं रखेंगे। विकार में नहीं जावेंगे। क्रिमनल दृष्टि छोड़ देंगे फिर भी माया रावण से हार खा लेते हैं। तो वह निर्विकारी बनने चाहती है तो उनको तंग करते हैं। इसलिए कहा जाता है अबलाओं पर अत्याचार होती है। पुरुष तो बलवान होते हैं। स्त्री निर्बल होती है। लड़ाई आदि में भी पुरुष ही जाते हैं; क्योंकि बलवान हैं। स्त्री नाजुक होती है। उनका कर्तव्य ही अलग है। वह घर सम्भालती है। बच्चे पैदा करती है। यह भी बाप समझाते हैं वहाँ होता ही है एक बच्चा। सो भी विकार का नाम नहीं। यहाँ तो सन्यासी भी कब कब कह देते हैं कि एक बच्चा तो जरूर होना चाहिए। वह है ठग सन्यासी। क्रिमनल आई वाले ऐसे शिक्षा देते हैं। अभी बाप तो कहते हैं इस समय के बच्चे क्या काम के होंगे जबकि विनाश सामने खड़ा है। सभी खत्म हो जावेंगे। मैं आया हूँ इस पुरानी दुनिया का विनाश करने। वह हुई सन्यासियों की बात। उन्हों को तो विनाश की बात की मालूम ही नहीं। तुमको बेहद का बाप समझाते हैं अब विनाश होना है। तुम्हारे बच्चे वारिस बन न सकेंगे। तुम समझते हो हमारे कुल की निशानी रहे; परन्तु पतित दुनिया की कोई भी निशानी रहेगी नहीं। तुम अभी समझते हो पावन दुनिया थी। मनुष्य भी याद करते हैं क्योंकि पावन दुनिया होकर गई है जिसको स्वर्ग कहा जाता; परन्तु अभी मनुष्य तमोप्रधान होने के कारण समझ नहीं सकते। उन्हों की दृष्टि ही क्रिमनल है। इसको कहा जाता है धर्म की ग्लानी। आदि सनातन देवी देवता धर्म में ऐसी बातें होती नहीं थी। अभी है पतित। पुकारते भी हैं हे पतित–पावन आओ। हम पतित दुखी हैं। बाप समझाते हैं हमने तुमको पावन बनाया था। फिर माया

के कारण तुम पतित बने हो। अभी फिर पावन बनो। पावन बनते हो फिर माया की युद्ध चलती है। कहते हैं बाबा आते रहते थे फिर विकार में हराये लिया। बाप से वरसा लेने पुरुषार्थ कर रहा था; परन्तु फिर काला मुँह कर दिया तो वरसा कैसे मिलेगा। बाप आते हैं गोरा बनाने। देवताएँ जो गोरे थे वे ही काले बने हैं। देवताओं के ही काले शरीर बनाते हैं। क्राइस्ट, बुद्ध आदि को कब काला देखा? देवी देवताओं का ही काला मुँह दिखाते हैं; परन्तु यह भी समझ नहीं है कि हम अपने देवी देवताओं को काला क्यों बनाते हैं। और कोई को काला नहीं बनाते हैं। भारतवासी देवताओं को ही बनाते हैं। जो सर्व का सद्गति दाता परमपिता परमात्मा सर्व का बाप जिसको कहते हैं हे परमपिता परमात्मा आकर लिबरेट करो। वह कोई काला थोड़े ही हो सकता है। वह तो सदैव गोरा, एवरप्युर है। सर्व शास्त्र मई शिरोमणि गीता ही है। बाकी सभी शास्त्र हैं बाल बच्चे। सभी धर्म बाल बच्चे तो शास्त्र भी बाल–बच्चे हो गये। परमात्मा को सर्वव्यापी कह ग्लानी कर दी है। इसलिए भारतवासी कंगाल पतित बन गये हैं। कहते भी हैं हे पतित पावन आओ; परन्तु फिर समझते नहीं हैं। अपन को बड़े2 महात्मा आदि कहलाते रहते। महात्मा अर्थात् महान आत्मा। अभी कलियुग में तो महान आत्मा हो न सके; क्योंकि शरीर तो सभी को विकार से ही लेना पड़ता है। महानात्मा देवताओं को कहा जाता है। कृष्ण भी देवता हुआ ना। तो अब कलियुग है। कलियुग में महानात्मा आये कहाँ से। श्रीकृष्ण सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स था। उनमें दैवीगुण थे। अभी तो देवता कोई है नहीं। साधु सन्त आदि भल पवित्र बनते हैं फिर भी पुनर्जन्म तो विकार से ही लेते हैं। फिर सन्यास धारण करना पड़ता है। कृष्ण तो दूसरा शरीर लेते हैं तो वह भी पवित्र है ना। देवताएँ पवित्र ही होते हैं। रावण वहाँ होता ही नहीं। यह भारतवासी भूल गये हैं। यहाँ रावण राज्य है। रावण को दस सीस दिखाते हैं। 5 स्त्री के, 5 पुरुष के। यह भी समझते हैं 5 विकार हरेक में है। देवताओं में तो नहीं कहेंगे ना। वह तो है ही सुखधाम। वहाँ भी रावण होता तो फिर दुखधाम हो जाता। मनुष्य समझते हैं देवताएँ भी बच्चे पैदा करते हैं विख से। वह भी तो विकारी ठहरे। उन्हों को यह पता नहीं है देवताओं को गाया जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। तब तो उन्हों को पूजा जाता है। सन्यासी पूज नहीं सकते। उन्हों का धर्म ही अलग है। वह गृहस्थ धर्म वालों (अर्थात् स्त्री और पुरुष) पवित्र बना नहीं सकते। कब ख्याल भी नहीं आवेगा। सिर्फ एक को बनावेंगे। हद का सन्यास कराये अपने मिशन को बढ़ाते रहते हैं। सन्यासियों की भी मिशन है। मेल को ग्लानी की बातें सुनाये अपने धर्म में ले जाते हैं। उन्हों को कहेंगे सन्यासियों की मिशन। सिर्फ पुरुषों को सन्यास कराये मिशन को बढ़ाते हैं। बाप फिर प्रवृत्ति मार्ग के नई मिशन बढ़ाते हैं। सभी को पवित्र बनाते हैं। जोड़ी को ही पवित्र बनाते हैं। फिर तुम जाकर देवता बनेंगे। ऐसे नहीं आत्मा पवित्र बनी तो सन्यासी जाकर बनेंगे। तुम सन्यासी बनने लिए नहीं आते हो। तुम तो आते हो विश्व का मालिक बनने लिए। वह तो फिर भी गृहस्थ में जन्म लेते हैं। फिर निकल जाते हैं। तुम्हारे संस्कार हैं पवित्रता की। अभी अपवित्र बने हो फिर पवित्र बनना है। तुम बच्चे जानते हो बाप पतित गृहस्थ आश्रम को पावन बनाते हैं। पावन दुनिया को सतयुग–पतित दुनिया को कलियुग कहा जाता। कितने पापात्माएँ हैं। सतयुग में यह बातें होती ही नहीं। बाप कहते हैं जब2 भारत में धर्म की ग्लानी होती है अर्थात् देवता धर्म वाले पतित बन जाते हैं तो अपनी ग्लानी कराते हैं। बाप कहते हैं हमने तुमको पावन बनाया फिर तुम पतित बने हो। कोई काम के न रहे हो। जब ऐसे पतित बन जाते हो तब फिर पावन बनाने हमको आना पड़ता है। यह ड्रामा का चक्र है जो फिरता रहता है। स्वर्ग में जाने लिए फिर दैवीगुण भी चाहिए। क्रोध भी नहीं होना चाहिए। क्रोध है तो भी जैसे असुर कहलावेंगे। बड़ी शांतचित्त अवस्था चाहिए। क्रोध करते हैं तो कहेंगे इनमें क्रोध का भूत है। कोई भी भूत जिनमें है वह देवता बन सके। नर से नारायण बन न सकेंगे। उनको तो कहा ही जाता है निर्विकारी दुनिया। यथा राजा रानी तथा प्रजा निर्विकारी है। भगवान बाप ही आकर सम्पूर्ण निर्विकारी बनाते हैं। आदि सनातन हिन्दु धर्म की स्थापना हो जाती है। वहाँ यथा राजा रानी तथा प्रजा पावन है। यहाँ यथा राजा रानी तथा प्रजा पतित है। पावन दुनिया अलग है, पतित दुनिया अलग है। यह भी समझानी

देनी होती है। तुम असल पावन गृहस्थ आश्रम वाले थे। अब है पतित। बाप भी कहते हैं तुम कितने विकारी बन पड़े हो। पतित को अधर्मी कहा जाता है। पावन को अधर्मी नहीं कहेंगे। तो बाप समझाते हैं मैं अधर्मों का विनाश और एक आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापना करता हूँ। अधर्मी को धर्म में ले जाता हूँ। तुम भी आगे हिन्दुधर्म में अपन को समझते थे। तुम ही पावन देवता थे सो अभी पतित बने हो। मैं भारत में ही आकर पावन बनाता हूँ। जो जितना पावन बनेंगे उतना ही सुखी बनेंगे। एपस्युलिटली पावन बन और बनाते रहेंगे, मेहनत करेंगे तो ऊँच पद पावेंगे। नहीं तो कम पद पावेंगे। यहाँ सभी पतित हैं। पावन ऊँच अर्थात् बहुत धनवान। पतित नीच अर्थात् कम धनवान। वहाँ भी ऐसे होता है। वहाँ तुम पावन बनते हो परन्तु बहुत धनवान। कम धनवान तो होते हैं ना। नहीं तो नौकर कैसे बने। दास दासियाँ तो सभी मिलती है ना। यहाँ भी धनवान जो होते हैं दास–दासी रखते हैं; परन्तु यहाँ है पतित। वहाँ होंगे पावन। वह पावन साहुकार वह पावन .....। वह पावन दुनिया यह पतित दुनिया। यथा राजा रानी तथा प्रजा बनने में 5 विकार न होनी चाहिए। देखना चाहिए हमारे में कौनसा विकार है। बाबा के पास आते हैं तो विकार की बात हो न सके; परन्तु क्रिमनल आई तो वह अपना काम करती रहती है। कोई को देखा और दिल खराब होगा। बुरा संकल्प आते हैं। गोया क्रिमनल आई है। देवताएँ हैं सिवीलाइज्ड। सूरदास की कहानी भी इस पर है। यह तो बाप सिवीलाइज्ड बना देते हैं। सिवील आई सिवाय बाप के और कोई दे न सके। सन्यासी भी क्रिमनल दुनिया में हैं। तो क्रिमनल हो जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह कुछ न कुछ है ही। जन्म भी विख से ही लेते हैं। रामराज्य और रावण राज्य को तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। प्रतिज्ञा करते हैं फिर भी माया पकड़ती रहती है। जाकर छीछी बनते हैं। कुसंग का रंग लगने से विकारी बन जाते हैं। तो यह सभी समझाने की बातें हैं। पति(त) और पावन बनने का खेल है। पतितों को पुकारना ही पड़े। तुम पतित बने हो फिर हमको पावन आकर बनाना ही पड़ता है। सभी तो पावन बन न सके। पावन बन फिर पतित बन जाते हैं। कोई न कोई की प्रवेशता होती है। तो पावन बनते ही नहीं। इन ल0ना0 को सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है। इन्हों की प्रजा भी तो होगी ना। यथा राजा रानी तथा प्रजा। राजा रानी पवित्र तो प्रजा भी पवित्र होती है। फिर पतित होंगे तो यथा राजा रानी तथा प्रजा पतित होगी। बाप में सारी रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। जो समझाते हैं। और मनुष्यों में तो ऐसे बातों का ज्ञान है नहीं। मनुष्यों को तुम ज्ञान देते हो फिर भी समझते जरा भी नहीं है। तुम्हारे पास कई आते हैं अथवा तुम मित्र–सम्बन्धियों आदि पास जाते हो, उनके पास तुम रहते हो कितना माथा मारते हो तो भी देवता बनते ही नहीं। तुम्हारा तो फर्ज है पतितों को पावन बनाना। तुम्हारा संग ही पावन के साथ है। पतित के साथ संग नहीं है। तुम्हारा धर्म ही यह है। ऐसे भी नहीं कि तुमको पतित में ही रहना है फिर पावन में भी रहना है। पतित को पावन बनाना है। नहीं तो पतित के साथ रहने से उनका असर पड़ जाता है। सत का संग तारता है। कुसंग में गये तो उनका रंग लग जाता है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

डायरेक्शनः– देहली में करोलबाग गुरुद्वारा रोड पर म्युजियम के लिए मकान लिया गया है। म्युजियम बन रहा है तब तक सेन्टर तो है ही। करोलबाग पालु छोटी वाला सेन्टर भी अब नई म्युजियम वाले मकान में बदली हो गया है। –– नये मकान(म्युजियम) बनना है की एड्रेस यह है। :– **BRAHMA KUMARIS**

2239, Gurdwara Road,
Karol Bagh,
NEW DELHI-5